Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

मेवाड़ राज्य की विदेश नीति (1382 ई. से 1528 ई. तक)

अंकित सोनी *

* एम.ए., नेट (जेआरफ) (इतिहास) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – मेवाड़ राज्य का भारत तथा राजस्थान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर शासन करने वाला गुहिल वंश विश्व में सर्वाधिक लंबे समय तक शासन करने वाले वंशों में एक है। मेवाड़ राज्य की ख्याति त्याग, समर्पण तथा अपने मातृभूमि के लिए मर मिटने की भावना रखने के कारण संपूर्ण देश में प्रसिद्ध है। यहां पर ऐसे अनेक शूरवीर पैदा हुए जिन्होंने अपनी मातृभूमि को आक्रांताओं तथा विदेशी शासको से बचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। यहां के महाराणाओ न अपनी मातृभूमि की रक्षा व स्वतंत्रता को बनाए रखने हेतु जो अपूर्व सेवा व त्याग किए हैं उन सबको हम सभी आज बड़ी श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

मेवाड़ राज्य के लिए 1382 ई. से 1528 ई. तक का काल मेवाड़ की विदेश नीति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण काल है। इस काल में मेवाड़ के अपने पड़ोसी राज्य तथा अन्य राज्यों के साथ संबंधों में कई ऐसे परिवर्तन आते हैं जो लंबे काल तक मेवाड़ की राजनीति को प्रभावित करते हैं इस काल की शुरुआत महाराणा लाखा के राज्यारोहण के साथ होती है। राणा लाखा का राज्याभिषेक 1382 ईस्वी में हुआ। लाखा राणा क्षेत्र सिंह के पुत्र थे। लाखा के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत को अनेक उतार–चढ़ाव देखने पड़े 1388 ईस्वी में फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद तुगलक सल्तनत का तेजी से विघटन शुरू हो गया। मेवाड़ राज्य के लिए अनुकूल परिस्थितियां देख राणा लखा ने भी राज्य विस्तार की नीती अपनाई। राणा लाखा ने मेरो को पराजित कर बदनौर प्रदेश को अपने अधीन कर लिया। तथा बूंदी के राव वीर सिंह हाडा को मेवाड़ का प्रभुत्व मानने के लिए विवश कर दिया तथा जहाजपुर, मेरवाड़ा, शेखावाटी क्षेत्र तथा वैराट क्षेत्र को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। तथा अपनी बुद्धिमता का परिचय देते हुए राणा लाखा ने डोडिया राजपुतों को जागीरे प्रदान कर मेवाड़ की सैनिक शक्ति का विकास किया तथा मारवाड़ नरेश राव चूंडा की पुत्री राजकुमारी हंसाबाई से विवाह कर मारवाड़ राज्य से अपने संबंध मजबूत किए। राणा लाखा के बाद उनके पुत्र मोकल मेवाड़ के राजा बने जिनकी माँ हंसाबाई थी। मोकल के शासक बनने के कुछ समय पश्चात ही राणा मोकल के अभिभावक तथा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र चूण्ड़ा हंसाबाई के भाई रणमल के शासन में हस्तक्षेप से नाराज होकर मेवाड़ छोड़ कर माण्डू में सुल्तान की सेवा में चले गए। उसके बाद रणमल का प्रभाव मेवाड़ दरबार में और अधिक बढ़ गया तथा उन्होंने मेवाड़ की राजनीति को अपने पक्ष में कर लिया इस प्रकार राठौड़ों का प्रभाव मेवाड़ राज्य पर अत्यधिक बढ़ गया। परन्तु कुछ समय पश्चात राणा मोकल ने इससे मुक्त होकर विस्तृत व शक्तिशाली बनाने का कार्य किया इसमें उन्होंने नागौर के फिरोज खान तथा गुजरात के अहमद शाह को परास्त कर अपनी सीमाओं का विस्तार किया। परंतु दुर्भाग्यवश अहमदशाह से युद्ध में पड़ाव के दौरान उसके दो चाचाओ चाचा और मेरा, जो राणा क्षेत्र सिंह की अवैध संतान थे ने राणा मोकल की धोखे से हत्या कर दी।

राणा मोकल के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र कुंभा मेवाड़ के शासक बनते हैं कुंभा के विषय में डॉ. गोपीनाथ शर्मा कहते हैं सम्पूर्ण गोहिल वंशीय शासकों में कुंभा या कुम्भकर्ण ही एक ऐसा शासक था जो उसके अनेक गुणों विशेषता के प्रतीक विरुदो से विख्यात था। कुंभा ने अपने आरंभिक शासनकाल में कई चुनौतियों का सामना किया। मालवा व गुजरात के शासक मोकल के समय से ही मेवाड़ के समीप के प्रदेशों पर अपना अधिकार करने का प्रयास करने लग गए थे तथा पड़ोसी राजपूत शासक भी इस स्थिति का लाभ उठाते हुए मेवाड़ के क्षेत्रों को हड़पने का प्रयास करने लगे। इन परिस्थितियों में उसने अपनी आवश्यकता के लिए रणमल को मंडोर से मेवाड़ बुला लिया। रणमल के आने पर कुंभा ने राठौड़ सेना तथा सिसोदिया सेना को संयुक्त रूप से चाचा व मेरा के विरुद्ध भेजा। चाचा व मेरा मारे गए परन्तु चाचा का पुत्र एका व महपा पंवार भाग कर माण्डू के शासक की शरण में चले गए।

मारवाड़ के साथ सम्बन्ध इसके कुछ वर्ष पश्चात ही मेवाड़ के कुछ स्थानीय सरदारों द्वारा रणमल की प्रेमिका भारमली ये सहायता से 1438 ई. में उसकी हत्या करवा दी उसके बाद राठौड़ तथा सिसोदिया के बीच रिश्तों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस समय मारवाड़ नेता विहीन था। मारवाड़ पर अधिकार करना सरल सोच कुंभा ने चुंडा के नेतृत्व में मारवाड़ पर आक्रमण हेतु सेना भेजी तथा राजधानी मंडोर पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् कई वर्षों के संघर्ष के उपरान्त ही रणमल के पुत्र जोधा द्वारा मंडोर पर अधिकार संभव हो सका। तथा हंसाबाई की मध्यस्थता के पश्चात् दोनों राज्यों में शांति समझौता सफल हुआ।

बूँढी के साथ सम्बन्ध बूंदी राज्य दिल्ली मालवा और मेवाड़ के मध्य स्थित था तथा इसकी सीमा मेवाड़ व मालवा क्षेत्र से सर्वाधिक मिलती थी। यहां पर हाड़ा राजपूतों का शासन होने के कारण इस क्षेत्र को 'हाडौती' कहा जाता था। महाराणा कुंभा के समय रणमल ने बूंदी पर आक्रमण करके मांडलगढ़ को जीत लिया और बूंदी के शासक को मेवाड़ की प्रभु सत्ता मानने के लिए विवश किया। इससे मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को अत्यधिक असंतोष हुआ जो की उस समय बूँढी के शासक की सहायता कर रहे थे महमूद खिलजी ने 1442 ई. तथा 1446 ई. में दो बार हाडौती क्षेत्र पर आक्रमण किया तथा इस क्षेत्र पर पुन: अपनी प्रभु सत्ता स्थापित कर ली। मालवा के शासन से छुटकारा दिलाने के लिए कुंभा ने बूंदी के शासको की सहायता की तथा बूंदी के राज्य के विजित क्षेत्र उन्हें वापस सौंप कर बूंदी के

शासक को अपना करदाता बना दिया। बूंदी विजय का उल्लेख रणकपुर के जैन मंदिर लेख में (वि.सं. 1496) तथा कुंभलगढ़ के लेख (वि.सं. 1517) में मिलता है।

कुंभा और मालवा महाराणा कुंभा के समय मालवा का शासक महमूद खिलजी था जो 1435 ईस्वी में सुल्तान बना था। दोनों शासक अपने शासनकाल में अपने-अपने राज्य को एक शक्तिशाली रूप देने में लग रहे परिणाम स्वरुप इनमें आपसी संघर्ष स्वाभाविक था जो कि लंबे समय तक चला। संघर्ष के कारणों में - दिल्ली सल्तनत का निर्बल होना, राणा कुंभा द्वारा हाडोती विजय, मालवा के सुल्तान द्वारा राणा कुंभा के विरोधियों को शरण देना, तथा राणा कुंभा द्वारा मालवा के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना, इत्यादि रहे हैं। तथा इसी समय मालवा तथा गुजरात की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने के उद्देश्य से कुंभा ने भीलो से मैत्री संबंध भी स्थापित किया। तथा मेवाड़ की दक्षिण सीमा पर किले बंदी करते हुए कई महत्वपूर्ण दुर्गों का निर्माण किया। राणा कुंभा ने 1437 ईस्वी में मालवा पर आक्रमण किया वह सारंगपुर के पास युद्ध में मोहम्मद को हरा दिया तथा विजय के उपलक्ष में चित्तौड़गढ़ में भव्य कीर्ति स्तंभ का निर्माण किया। कुछ समय तक अपनी सैनिक शक्ति सुदृढ़ करने के बाद महमूद खिलजी ने 1442 ई. मेवाड़ पर पुन: आक्रमण करने की योजना बनाई परंतु थाना कुंभा के अपने पड़ोसी राजपूत शासको से अच्छे संबंध होने के कारण मालवा से प्रत्येक युद्ध में कुंभा को विजय प्राप्त हुई राणा कुंभा की विदेश नीति का प्रथम लक्ष्य राजपूताना के दूसरे राजपूत वंश से मधुर संबंध बनाना लक्ष्य था इससे उन्हें अपने धूर प्रतिद्वंद्वी राज्यों से युद्ध के समय हमेशा सहायता प्राप्त हुई। मेवाड़ तथा मालवा दोनों प्रभुत्वशाली राज्य थे तथा दोनों अपनी सीमा का विस्तार करने के लिए आपस में टकराते थे मेवाड़ का मालवा तथा गुजरात राज्य से लगातार टकराव का एक कारण यह भी रहा कि दोनों राज्यों से मेवाड़ की सीमा सर्वाधिक लगती थी इसलिए अपने सीमा का फैलाव करने के लिए दूसरों के राज्य का अतिक्रमण करना आवश्यक हो जाता था। मेवाड़ तथा गुजरात के बीच संघर्ष की सर्वप्रथम महाराणा कुंभा के समय ही शुरू हुआ दोनों के मध्य संघर्ष का एक प्रमुख कारण नागौर का उत्तराधिकार था। गुजरात से युद्ध के पहले कुंभा द्वारा सिरोही और अबू के देवड़ा चौहानों के साथ संबंध सुदृढ़ कर लेने के कारण तथा अपनी दक्षिणी सीमा को मजबूत कर लेने से यह युद्ध भी कुंभा के पक्ष में गया।

1509 ईस्वी में जब महाराणा सांगा का राज्याभिषेक हुआ तो मेवाड़ राज्य की विदेश नीति में काफी परिवर्तन आए सांगा ने अपने सबसे प्रबल प्रतिद्वंदी मालवा राज्य के प्रति आक्रामक नीति का प्रदर्शन किया तथा कुंभा द्वारा चली आ रही राजपूत नीति को और सुदृढ़ किया तथा राठौड़ो, हाड़ा राजपुतों तथा खिंची राजपूतों साथ अपने संबंधों को और अधिक मजबूत किया।

दिल्ली सल्तनत और सांगा सिकंदर लोदी के अंतिम दिनों में दिल्ली सल्तनत को कमजोर देख सांगा ने सीमावर्ती कुछ भागों को मेवाड़ राज्य में मिला लिया। इससे इब्राहिम लोदी और सा के मध्य टकराव उत्पन्न हो गया तथा तथा 1518 ईस्वी में बूंदी के निकट खातोली स्थान पर भीषण युद्ध में राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया। कर्नल टॉड, डॉ. ओझा, और अमर काव्य वंशावली आदि ग्रन्थों में सांगा की इस निर्णायक विजय का उल्लेख किया गया है।

राणा सांगा और बाबर - 1526 ईस्वी में पानीपत के प्रथम युद्ध के उपरांत बाबर विजय होकर आगरा का स्वामी बन गया था। परंतु इस समय राजस्थान में राणा सांगा के नेतृत्व में राजपूत भी शक्तिशाली बन चुके थे तथा यह समय राणा सांगा के चरमोत्कर्ष का काल चल रहा था। बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में युद्ध का कारण राणा सांगा द्वारा संधि भंग करने और विश्वासघात करना बताया है बाबर ने लिखा है कि राणा सांगा के एक दूत ने बाबर के समक्ष उपस्थित होकर उसकी निष्ठा प्रदर्शित की और यह निश्चय हुआ कि जब वह दिल्ली के समीप पहुंच जाए तो संग इस ओर से आगरा पर आक्रमण कर देगा परंतु सांगा द्वारा ऐसा नहीं किया गया। परंतु बाबर द्वारा बताए गए इस कारण की सत्यता और किसी ग्रंथ द्वारा प्रमाणित नहीं की जा सकी है। महाराणा सांगा ने बाबर के विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने के लिए सभी राजपूत शासको को और सरदारों को निमंत्रण भेजा जिसकी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई और मारवाड़, चंदेरी, मेड़ता, सिरोही, डुंगरपुर, सलूंबर, सादड़ी, गोगुंदा के राजपूत शासको ने महाराणा सांगा की ओर से युद्ध में भाग लिया इससे राणा सांगा के द्वारा दूसरे राजपूत राज्यों के प्रति अपनाई गई नीति की सफलता प्रदर्शित होती है तथा उस समय महाराणा सांगा राजपूताना के सर्वश्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रदर्शित होते हैं।

मेवाड़ के राज्य चिन्ह 'जो दृढ़ राखै धर्म को तीही रखे करतार' से ही स्पष्ट हो जाता है की मेवाड़ के महाराणा अपने धर्म पर कितने अटल रहते थे। उसकी रक्षा उन्होंने कई बार सहर्ष अपने प्राणों की आहुति देकर की है। मेवाड़ की छवि केवल राजस्थान में नहीं बल्कि समस्त भारत देश में हमेशा एक शक्तिशाली तथा गौरवशाली राज्य के रूप में रही है। जिसका श्रय मेवाड़ की विदेश नीति को भी जाता है। अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में मालवा तथा गुजरात जैसे शक्तिशाली राज्यो के होने के बाद भी न केवल मेवाड़ ने हमेशा अपना अस्तित्व बनाए रखा अपितु अपने सीमाओं को निरंतर विस्तार किया साथ ही अपने सांस्कृतिक गौरव को भी शिखर तक पहुंचाया। तथा अन्य राजपूत राज्यों के साथ कभी संघर्ष तो कभी मित्रता की नीति अपनाकर राजपूताना में अपने प्रभाव को बढ़ाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. ओझा : 'उदयपुर राज्य का इतिहास', प्रथम भाग।
2. डॉ. गोपीनाथ शर्मा: राजस्थान का इतिहास।
3. शर्मा व पावा : राजस्थान का इतिहास।
4. कालूराम शर्मा व प्रकाश व्यास: राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण (प्रारम्भ से 1949 तक)
5. कालूराम शर्मा : कर्नल जेम्स टॉड कर्त राजस्थान का इतिहास।
6. डॉ. राघवेंद्र सिंह मनोहर: राजस्थान का इतिहास (प्राचीनकाल से मध्यकाल तक)।

****